ओउम्

'श्रद्धापूर्ण प्रेरक व्यक्तित्व : स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती'

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

हमें स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती जी के दर्शन करने, उनके प्रवचन सुनने व उनकी त शिखरणी छन्द स्वरचित पद्यों को उनके ही श्रीमुख से सुनने, अपने भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून में सन् 1980 में उनका

मन मोहन कुमार आर्य

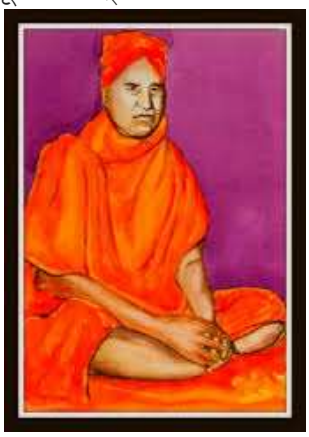

प्रवचन कराने व उनके साथ कुछ समय व्यतीत करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। मई, 1995 में भी हमें उन पर एक लेख लिखने का अवसर मिला था जो तब देहरादून से प्रकाशित प्रमुख दैनिक पत्र 'दून दर्पण' में प्रकाशित हुआ था। इस बीच पर्याप्त कालावधि बीत चुकी है परन्तु हमें लगता है कि वह वर्तमान पीढ़ी के लेखकों व पाठकों द्वारा विस्मृत हो चुके हैं। स्वामीजी का व्यक्तित्व व शारीरिक स्वरूप हमें बाह्य दृष्टि से स्वामी दयानन्द जी से मिलता-जुलता लगता था। लगभग 6 फीट का ऊंचा कद, स्वस्थ शरीर, गौर वर्ण की विशाल व भव्य मूर्ति के समान आकृति वाले स्वामीजी को देखकर उनके मुख मण्डल पर दिव्य कान्ति व ओज के दर्शन होते थे। हमने उन्हें हंसते हुए भी देखा है। उस अवसर हमने जो उन्हें देखा था वह अन्दाज व उस प्रकार की हंसी हमने केवल स्वामी विद्यानन्द 'विदेह' की ही देखी है। वह अपने सिर पर जो केसरी पगड़ी बांधते थे वह अद्भूत व आकर्षक दिखाई देती थी। उनके साथ लगभग सन् 1980 में व्यतीत किए गये कुछ क्षण हमें अपने जीवन के आनन्ददायक प्रमुख क्षण लगते हैं। उनका सान्निध्य वस्तुत किसी दिव्य पुरूष की संगति व उपासना के समान लगता था।

अतः उनके कुछ संस्मरण जो उनके जीवन व कार्यों से सम्बन्धित हैं, हम प्रस्तुत कर रहे हैं। स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती एक ऐसे सन्त थे जिन्होंने महर्षि दयानन्द को अपना आदर्श मानकर उनको अपने जीवन में चरितार्थ करने का प्रयास किया था। उनका जीवन भी महर्षि दयानन्द से मिलता-जुलता वैदिक आदर्शों व देश के हित के कार्यों के लिए समर्पित था। उनमें हमें वैदिक धर्म व देश के लिए बलिदान होने की भावना का अनुभव होता है। वह आर्य समाज वा वैदिक धर्म के प्रसिद्ध व प्रमुख संन्यासी, विद्वान, उपदेशक, प्रचारक व शिक्षा जगत को समर्पित जीवन के धनी थे। वह ऐसे गिने-चुने संन्यासी, विद्वान व नेता थे जिन्होंने राजनीति के क्षेत्र में भी अपना प्रभाव अंकित व प्रदर्शित किया था। बिना किसी दल का टिकट लिए वह आर्य समाज की विचारधारा व अपने निजी व्यक्तित्व के आधार पर हरयाणा के करनाल निर्वाचन क्षेत्र से सांसद चुने गये थे। **''ओम् का ध्वज''** ही उनका झण्डा था और आर्य समाज की विचारधारा के अनुसार समाज का निर्माण करना, देश की प्राणपण से सेवा तथा पक्षपात को समाप्त कर सबके प्रति न्यायसंगत व्यवहार करना ही उनका राजनैतिक एजेण्डा था।

स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती देश के उन सन्तों में रहे हैं जिन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रदर्शित वैदिक मान्यताओं एवं समाजोत्थान के कार्यां को जीवन के अन्तिम क्षणों तक किया । स्वामी रामेश्वरानन्द बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। इनके जीवन का अध्ययन कर कहा जा सकता है कि देश प्रेम एवं समाजोत्थान की जो पवित्र भावना इनमें थी वह इनके पूर्ववर्ती महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायियों के अतिरिक्त अन्य संन्यासियों में दृष्टिगोचर नहीं होती। **स्वामी रामेश्वरानन्द का जन्म सन् 1890 ई. में एक कृषक जाट परिवार में उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जनपर के गांव कुरेव में हुआ था। बाल्यकाल में ही माता-पिता का देहान्त हो जाने के कारण मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया और 15 वर्ष क आयु में वह घर छोड़कर काशी पहुंच गये। काशी में आपको एक गुजराती संन्यासी स्वामी कृष्णानन्द का सत्संग सुलभ हुआ जिन्होंने रामस्वरूप को संन्यास की दीक्षा देकर स्वामी रामेश्वरानन्द**

सरस्वती नाम दिया। संन्यास दीक्षा के पश्चात तीर्थ स्थानों का भ्रमण करते हुए स्वामी जी दिल्ली पहुंचें जहां **आर्य समाज के भजनोपदेशक स्वामी भीष्म जी महाराज के विचारों से प्रभावित हुए और उन्हें अपना गुरू स्वीकार किया।**

मनुष्य के जीवन का लक्ष्य मोक्ष है जिसकी प्राप्ती विद्या से होती है। वेदवाक्य 'विद्यामृतमश्नुते' इसकी पुष्टि करता है। स्वामी भीष्मजी ने स्वामी रामेश्वरानन्द को विद्यार्जन का परामर्श दिया जिसे शिरोधार्य कर स्वामीजी ने गुरूकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर, साधु आश्रम, हरदुआगंज, गुरूकुल सिकन्दराबाद, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, लाहोर आदि अनेक अध्ययन संस्थानों में रहकर उस समय के प्रसिद्ध आचार्यों से संस्कृत व्याकरण, वेद एवं शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त किया। सन् 1935 ई. में आपने अध्ययन पूरा कर लिया और सार्वजनिक जीवन में पदार्पण किया।

पराधीन भारत में देश में शिक्षा की समुचित व्यवस्था नहीं थी। देश की विशालता की तुलना में जो शिक्षा संस्थान थे, वह अत्यन्त कम थे। वेदों के ज्ञान के लिए आर्ष व्याकरण का पारगामी ज्ञान एवं योगाभ्यास आवश्यक है। इस कार्य को प्राथमिकता देकर स्वामी रामेश्वरानन्द जी ने स्वामी भीष्मजी महाराज की प्रेरणा एवं अपने शिष्य आचार्य धर्मवीर शास्त्री के सहयोग से करनाल के निकट घरौण्डा में एक गुरूकुल की स्थापना दिनांक 17 अप्रैल सन् 1939 को की। इस गुरूकुल के माध्यम से न केवल विद्यार्थियों का शारीरिक एवं बौद्धिक विकास ही हुआ है अपितु स्वतन्त्रता आन्दोलन में क्रान्तिकारियों की शरणस्थली भी यह स्थान रहा है।

स्वतन्त्रता से पूर्व हैदराबाद देश की एक प्रमुख रियासत थी जिसके शासक नवाब उस्मान अली ने अपनी बहुसंख्यक हिन्दू प्रजा के धार्मिक अधिकारों पर अनेक प्रतिबन्ध लगाकर उनका उत्पीड़न किया। इस अन्याय के विरूद्ध आर्य समाज को राष्ट्रीय स्तर पर सत्याग्रह की घोषणा की। अपनी प्रकार का यह अपूर्व सत्याग्रह था जिसमें देश के कोने-2 से आर्यवीरों के जत्थे पहुंचें और रियासत की प्रजा के धार्मिक एवं मानवीय अधिकारों के समर्थन में सत्याग्रह किया। निरकुंश धर्मान्ध नवाब व उसकी पुलिस ने अंहिस सत्याग्रहियों पर भी जुल्म किए और उन्हें जेलों में बन्द कर अमानुषिक यातनायें दी। **इस सत्याग्रह में सन् 1939 में स्वामी रामेश्वरानन्द जी भी 72 आर्यवीरों का जत्था लेकर गये। उन्हें वहां नांदेड़, औरंगाबाद, हैदराबाद आदि जेलों में रखा गया और यातनायें दी गई। जेल के दिनों में स्वामी रामेश्वरानन्द 24 घण्टों में केवल एक मुट्ठी पर चने खाकर ही अपना निर्वाह करते थे। स्वामी जी का संघर्ष सफल हुआ और नवाब को झुकना पड़ा।** सन् 1947 में देश के आजाद हो जाने पर भारत के प्रथम केन्द्रीय गृहमन्त्री ***सरदार वल्लभ भाई पटेल ने इस सत्याग्रह के लिए आर्य समाज की प्रंशसा करते हुए कहा था कि यदि आर्य समाज रास्ता न बनाता तो स्वातन्त्रयोत्तर हैदराबाद का भारत में विलय कठिन था।*** आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने सन् 1875 में उद्घोष किया था कि अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य की तुलना में स्वराज्य सर्वोपरि उत्तम होता है। यही कारण था कि आर्य समाज के अनुयायी स्वतन्त्रता संग्राम में अग्रणीय रहे। स्वतन्त्रता के इतिहास में अंग्रेजों ने जिन दो देशभक्तों को **'जलावतन अर्थात् देशनिकाला'** दिया वह दोनों, लाला लाजपत राय और सरदार अजीत सिंह, महर्षि दयानन्द के अनुयायी व आर्यसमाजी थे। कांग्रेस के प्रमाणिक इतिहास लेखक सर सीताभिपट्टारमैया ने कहा है कि स्वतन्त्रता आन्दोलन में जेल जाने वालों में आर्य समाजियों की संख्या 80 प्रतिशत थी। अतः यह स्वाभाविक था कि स्वामी रामेश्वरानन्द भी स्वराज्य आन्दोलन में संघर्ष करते। स्वामीजी ने महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये सभी आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया। **आपने ऋषिकेश एवं समीपवर्ती गांवों में घूम-2 कर नमक कानून का विरोध किया और जन जागृति उत्पन्न की। गिरफ्तारी के बाद आपको देहरादून जेल में रखा गया। पं. जवाहरलाल नेहरू भी उन दिनों देहरादून जेल में थे। एक ओर आपसे चक्कियां चलाने, पत्थर तोड़ने एवं मल-मूत्र-विष्ठा ढ़ोने का कार्य लिया गया वहीं आपकी हण्टर एवं लाठियों से पिटाई भी की गई फिर भी आपने कभी उफ तक न की। सन् 1942 के आन्दोलन में भी आपने गुरूकुल घरोण्डा के ब्रह्मचारियों को साथ लेकर समीपस्थ**

रेलवे लाइन की पटरियां उखाड़ने का साहसपूर्ण कार्य किया। आपके इस कार्य को अग्रेजों ने विद्रोह की संज्ञा दी और इस कारण स्वामीजी को सजा देने के साथ गुरूकुल को जब्त करने के आदेश दिये गये। यह सब कार्य स्वामी जी ने जन्मदात्री भारत मां के प्रति कर्तव्य भावना से किये और आजादी के पश्चात दूसरे महत्वाकांक्षी नेताओं की तरह सम्मान एवं पद की मांग नहीं की।

14 अगस्त सन् 1947 को अंग्रेजों व जिन्ना की मुस्लिम लीग की मांग के आधार पर देश का विभाजन होकर भारत व पाकिस्तान दो देश बनाये गये। पाकिस्तान से हिन्दू शरणार्थियों के भारत में आगमन पर आपने शिविर स्थापित किये और उनके प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने के साथ उनके भोजन, वस्त्र एवं आवास की व्यवस्था की जिससे वह निश्चिन्त हो सकें। पंजाब में जब हिन्दी भाषा की उपेक्षा एवं उसको समाप्त करने के उद्देश्य से सूबे की सरकार ने आर्यभाषा हिन्दी के साथ अनुचित सौतेला व्यवहार किया तो आर्य समाज ने हिन्दी को उचित स्थान प्रदान करने की मांग की। जब पंजाब की निरंकुश सरकार ने आर्य समाज की इस देश की हितकारी संविधान-सम्मत मांग को नहीं माना तो आर्य समाज ने पंजाब में **'हिन्दी-सत्याग्रह'** की घोषणा की। इस आन्दोलन में भी स्वामी रामेश्वरानन्द अग्रणीय नेताओं में रहे। आपने 6 जून 1957 को अपने सहयोगी हिन्दी भक्त सत्याग्रहियों के साथ पंजाब, सचिवालय, चण्डीगढ़ पर धरना दिया। अनेक बार सत्याग्रह करने के परिणामस्वरूप आप कई बार गिरफ्तार किये गये। **आपको नाभा तथा पटियाला जेलों में नजरबन्द रखा गया। आन्दोलन में आपको इतना पीटा गया कि आपका शरीर क्षत-विक्षत हो गया।** हिन्दी के प्रश्न पर आपने 13 फरवरी 1961 को पं. जवाहरलाल नेहरू से एक घण्टा तक वार्ता की थी।

सन् 1961 में मास्टर तारासिंह ने जब देश से पृथक पंजाबी सूबे की मांग की और स्वतन्त्रता दिवस 15 अगस्त, 1961 से अमृतसर में अनशन किया तो देश की एकता व अंखण्डता की रक्षा के लिए स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती जी ने भी दिल्ली में लालकिले के सामने आर्यसमाज दीवानहाल में 16 अगस्त सन् 1961 से आमरण अनशन किया। नेहरूजी के आश्वासन पर 31 अगस्त 1961 को आपने अनशन समाप्त किया। अनशन के दिनों में स्वामी रामेश्वरानन्द को मारने के भी कई असफल प्रयास किये गये।

आर्य संन्यासी के लिए वह सभी कार्य करणीय हैं जिनसे देश समाज सुदृण हो एवं उन्नति प्राप्त करें। आजादी के पश्चात देश के कर्णधार कई राष्ट्रीय समस्याओं को हल करने में असफल सिद्ध हुए। इन समस्याओं में गोहत्या व पशुहत्या पर प्रतिबन्ध एवं हिन्दी को पूरे देश में राजभाषा एवं सम्पर्क भाषा के रूप में लागू करना, जन्म पर आधारित जाति-पांति व्यवस्था का उन्मूलन, गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित पक्षपातरहित न्यायपूर्ण वर्ण-व्यवस्था का प्रवर्तन, अनिवार्य एवं निःशुल्क वैदिक मूल्य प्रधान गुरूकुलीय शिक्षा, संस्कृत को मुख्य स्थान देकर उसके पठन-पाठन की देश भर में व्यवस्था, सादगी सरल जीवन को व्यवहारिक करना आदि समस्यायें व कार्य सम्मिलित थे। **ऐसे ही अनेक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए स्वामीजी ने सन् 1962 के संसदीय निर्वाचन में हरयाणा के करनाल क्षेत्र से चुनाव लड़ा और प्रसिद्ध पत्रकार श्री वीरेन्द्र को पराजित कर भारी बहुमत से विजयी हुए। संसद में आपके सतत प्रयासों से अंग्रेजी भाषा के भाषणों के तत्काल व त्वरित आधुनिक अनुवाद-उच्चारण-ध्वनि यन्त्र स्थापित किये गये। इन ध्वनि-यन्त्रों द्वारा संसद सदस्यों को अंग्रेजी में दिए गये भाषण का तत्काल हिन्दी अनुवाद सुनाई दिया करता था। इस यन्त्र की स्थापना करने के निर्णय की 3 सितम्बर सन् 1963 को लोक सभाध्यक्ष सरदार हुकुम सिंह ने घोषणा की थी।**

आर्य समाज व सनातन धर्मियों के लिए गोरक्षा का प्रश्न सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। गोरक्षा का महत्व को पराधीन भारत में सबसे पहले यदि किसी ने समझा तो वह महर्षि दयानन्द सरस्वती थे। गोरक्षा आन्दोलन की सर्वप्रथम शुरूआत भी महर्षि दयानन्द ने ही की थी जब उन्होंने देश भर में अपने अनुयायियों से हस्ताक्षर करवाकर विदेशी सरकार से तत्काल गोहत्या बन्द कराने की मांग की थी। अनेक अंग्रेज अधिकारियों को भी स्वामीजी ने गोरक्षा

विषयक अपने तर्कों से सहमत कराया था। अन अंग्रेज वरिष्ठ अधिकारियों में से कुछ ने तो गो-मांस का सेवन न करने का वचन स्वामीजी को दिया था। स्वामी रामेश्वरानन्द अपने संसदीय जीवन में इस विषय में सचेत रहे और प्रयास किया कि गोहत्या बंद हो। 7 नवम्बर, 1966 को गोरक्षा के पक्ष में गोभक्तों ने लोकसभा को घेराव किया। इस आंदोलन के प्रत्यक्षदर्शी डा. शिवकुमार शास्त्री ने इसका उल्लेख कर लिखा था कि भारत सरकार गोभक्तों ने विशाल प्रदर्शन को देख कर कांप उठी। असामाजिक तत्वों द्वारा आगजनी तोड़फोड़ का बहाना बनाकर निहत्थी गोभक्त जनता पर लाठी चार्ज हुआ, अन्धाधुंध गोलियां चली। स्वामी रामेश्वरानन्द तत्काल बन्दी बनाये गये। इस घटना से दिल्ली में सन्नाटा था, गोरक्षक देशभक्तों की लाशें ठिकाने लगा दी गईं। गोहत्या के सन्दर्भ में यह ज्ञातव्य है कि गाय से हमें दुग्ध, गोबर, गोमूत्र, चर्म, बैल आदि मिलते हैं। गोदुग्ध का कोई विकल्प नहीं है। यह न केवल अन्न का विकल्प है अपितु अनेक साध्य व असाध्य रोगों से रक्षा भी करता है। इसी प्रकार से गोरक्षा का धार्मिक, समाजिक तथा मानवीय महत्व है। गोरक्षा देश की आर्थिक समृद्धि की रीढ़ है। गोहत्या करना अमानवीय एवं घृणित कार्य है जिससे मनुष्य कृतघ्न सिद्ध होता है। गोहत्या को सहना भी पापकर्म है। हमारे शंकराचार्यों को इस प्रश्न पर ध्यान देना चाहिये। गायों से प्राप्त बैलों, गोबर व गोमूत्र आदि से कृषि एवं खाद्यान्न के उत्पादन में ऊंचे लक्ष्य प्राप्त किये जा सकते हैं। न केवल स्वामी रामेश्वरानन्द ने गोरक्षा एवं हिन्दी रक्षा के लिए कार्य किया अपितु अपने चुनाव क्षेत्र के यमुना नगर की गोपाल पेपर मिल के श्रमिकों की समस्याओं को हल कराने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। ***स्वामीजी ने सांसद बनने पर संस्कृत में शपथ ग्रहण कर महर्षि दयानन्द के समर्पित भक्त होने का परिचय दिया था।*** **स्वामीजी, आर्य समाज की वेदी हो या भारत की संसद, अपने व्याख्यान से पूर्व वेदमन्त्र बोला करते थे। सन् 1970 के लगभग आपका आर्य समाज देहरादून में वृक्षों में जीव है या नहीं, विषय पर शास्त्रार्थ हुआ था जिसमें आपका पक्ष सफल रहा था। स्वानीय भारतीय पेट्रोलियम संस्थान में भी सन् 1980 में ईश्वर के स्वरूप पर आपका व्याख्यान हुआ था। अपने अपने जीवनकाल में अनेक पुस्तकें लिखीं। आप एक अच्छे कवि भी रहें हैं।**

पं. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने आर्य समाज के प्रमुख विद्वानों व सन्यासियों के जीवन चरित लिखकर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। हमनें भी 50 से अधिक आर्य समाज के विद्वानों के जीवनपरक लेखों को लिखा है जो समय समय पर स्थानीय व आर्य जगत की पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। हम श्री जिज्ञासुजी से स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती के जीवन पर कोई लेख या लघु पुस्तिका लिखने की विनती करते हैं। कई वर्ष पूर्व साप्ताहिक पत्र, आर्य सन्देश, दिल्ली ने स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती पर अपना एक भव्य विशेषांक निकाला था। उस काल में व उसके बाद उन पर कोई महत्वपूर्ण लेख देखने को नहीं मिला।

"जातस्य हि ध्रुवों मृत्यु, ध्रुवं जन्म मृतस्य च" की ईश्वरीय व्यवस्था अटल है। 8 मई, सन् 1990 को सायं 5.15 बजे मधुमेह रोग से पीड़ित होकर 101 वें वर्ष में आपका देहान्त हुआ। आने वाले समय में स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती का जीवन लोगों को प्रेरणा देता रहेगा औार हिन्दी व गोरक्षा आदि के प्रति इनके कार्यों से प्रेरणा ग्रहण करके वर्तमान और भावी पीढ़ी अपना कर्तव्य निर्धारित कर उसे पूरा करने के लिए धर्मान्दोलन करेगी और कृतघ्नता से स्वयं को बचायेगी।

-मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चक्कूवाला-2
देहरादून-248001
फोन : 09412985121